कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली

व्यवसायिक प्रशिक्षण
''कृषि पर्यटन एवं एकीकृत कृषि प्रणाली''

कृषि विज्ञान केंद्र, उजवा, दिल्ली के द्वारा दिनांक 10 से 19 सितम्बर, 2024 तक **''कृषि पर्यटन एवं एकीकृत कृषि प्रणाली : स्व-उधमिता सृजन का उत्तम माध्यम''** विषय पर 10 दिवसीय व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य दिल्ली व आसपास के राज्यों के लधु एवं सीमांत किसान, युवाओं एवं नव - युवतियों को कृषि पर्यटन एवं एकीकृत कृषि प्रणाली के क्षेत्र में अपना उद्यम एवं स्वरोजगार स्थापित करने हेतु उनकी क्षमता एवं कौशल विकास को विकसित करना था।

इस कार्यक्रम की शुरुआत में **केंद्र के अध्यक्ष डॉ. डी. के. राणा** ने प्रशिक्षण का उद्घाटन करते हुए बताया कि

केन्द्र की यह अच्छी पहल है, क्योकिं पर्यटन किसी भी देश का राजस्व उत्पन्न करने वाले महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है एवं कृषि पर्यटन ग्रामीण पर्यटन का उभरता हुआ धटक है, जिसमें कृषि की एकीकृत प्रणाली के साथ कृषि पर्यटन को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्र में स्वरोजगार स्थापित करने के साथ साथ स्थानीय आबादी को रोजगार और आय का अवसर भी प्रदान कर सकते है, जिससे उपभोक्ताओं को पर्यावरण के साथ साथ जीवन यापन एवं व्यक्तिगत जैविक उत्पाद भी उपलब्ध होगें।

इस प्रशिक्षण की शुरुआत 10 जुलाई, 2024 से **श्री कैलाश, विशेषज्ञ (कृषि प्रसार)** के संचालन में हुई, जिन्होनें बताया की किसान हमारे राष्ट्र का गौरव है और पर्यटक हमारे राष्ट्र की सम्पति है। कृषि-पर्यटन, पर्यटन

का एक रूप है, जिसमें कृषि आधारित प्रणालीयां शामिल होती है जो आगंतुकों को खेतों एवं कृषि गतिविधियों से जोडनें में मदद करता है, जहाँ पर्यटकों को अपने परिवार एवं बच्चों के साथ सीखने का अवसर प्रदान करता है एवं किसान के द्वारा किए जाने वाले विभिन्न खेंती के कार्यों को समझने और उनके कार्यो की सराहना करने में भी मदद करता है। इस प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुकों को जैविक कृषि पर्यटन एवं एकीकृत कृषि प्रणाली की स्थापना हेतु उसकी अवधारणा एवं वर्तमान परिदृय, प्रमुख धटक, मुल सिद्धांत, कृषि पर्यटन की स्थापना एवं स्थान चयन में आने वाली चुनौतिया एवं सावधानियाॅ, प्राकृतिक होम स्टे का निर्माण, कृषि पर्यटन के विभिन्न माॅडल, लेआउट एवं योजना, व्यवसाय प्रबंधन के साथ साथ कृषि पर्यटन के प्रमाणीकरण की विस्तृत जानकारी साझा की। **डॉ. राकेश कुमार, बागवानी विशेषज्ञ** ने कृषि पर्यटन एवं एकीकृत कृषि प्रणाली में बाग की स्थापना, लैण्डस्कैंपिंग, लाॅन, हेज, टोपयरी, इनडोर एवं आउटडोर पौधों की देखरेख एवं प्रबंधन के साथ साथ भृदृश्य से पर्यटन स्थल का सौंदर्यीकरण की विस्तृत जानकारी दी गई। **डॉ. रितु सिंह, विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)** ने कृषि पर्यटन के जैविक उत्पाद की प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन करके सीधे उपभोक्ता को उपलब्ध करवाने के बारे में जानकारी से अवगत करवाया। **डॉ. समर पाल सिंह, विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान)** ने जैविक रुप से एकीकृत कृषि प्रणाली के प्रमुख धटक एवं बागवानी आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली की स्थापना के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की। **डॉ. जय प्रकाश, विशेषज्ञ (पशुपालन)** ने पर्यटन के साथ स्वदेशी डेयरी फार्मिग एवं बैकयार्ड मुर्गी पालन के बारे में जानकारी से अवगत करवाया। **श्री बृजेश कुमार, विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान)** ने मिट्टी एवं पानी की जांच के साथ साथ वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन तकनीकी पर भी प्रकाश डाला।

इस प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुकों को नजदीक प्राकृतिक खेती कृषि पर्यटन का भ्रमण एवं समुह अभ्यास से कृषि पर्यटन माॅडल का निर्माण एवं प्रस्तुति भी की गई। इस 10 दिवसीय प्रशिक्षण में दिल्ली देहात के साथ विभिन्न राज्यों के 06 महिलाएं प्रशिक्षुओं के साथ 26 प्रशिक्षुकों ने भागीदारी की।

कृषि पर्यटन से किसानों की झोली भरने की तैयारी, दिया जा रहा प्रशिक्षण

गौतम कुमार मिश्रा • जागरण

- उजवा के कृषि विज्ञान केंद्र में प्रशिक्षण में प्रशिक्षुओं को दी गई जानकारी
- लैंडस्केपिंग से लेकर जैविक उत्पाद व पशुपालन के बारे में बताया गया

पश्चिमी दिल्ली : खेतीबाड़ी करने वाले किसानों की झोली अब पर्यटन से भरने की तैयारी की जा रही है। उजवा के कृषि विज्ञान केंद्र ने कृषि पर्यटन के लिए किसानों के इस विषय पर प्रशिक्षण देना भी शुरू कर दिया है। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों की झोली ऐसे लोगों से भरने की है, जो कृषि पर्यटन के माध्यम से खेतीबाड़ी से दूर रहकर कृषि की बारीकियों को नजदीक से देखना व समझना चाहते हैं। विज्ञानियों का मानना है कि महानगरीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच कृषि पर्यटन तेजी से लोकप्रिय हो रहा है, जो किसानों के लिए संभावनाओं का बेहतर द्वार खोलेगा।

कृषि पर्यटन एवं एकीकृत कृषि प्रणाली : स्व-उद्यमिता सृजन का उत्तम माध्यम विषय पर 10 दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिल्ली व आसपास के राज्यों के लघु एवं सीमांत किसान, युवाओं को कृषि पर्यटन एवं एकीकृत कृषि प्रणाली के क्षेत्र में अपना उद्यम एवं स्वरोजगार स्थापित करने के लिए उनकी क्षमता एवं कौशल विकास को विकसित किया गया। केंद्र के अध्यक्ष डा. डी. के. राणा ने बताया कि पर्यटन किसी भी देश का राजस्व उत्पन्न करने वाले महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है एवं कृषि पर्यटन ग्रामीण पर्यटन का उभरता हुआ घटक है। इसके अंतर्गत कृषि की एकीकृत प्रणाली के साथ कृषि पर्यटन को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्र में स्वरोजगार स्थापित करने के साथ स्थानीय आबादी को रोजगार और आय का अवसर भी प्रदान कर सकते हैं। इससे उपभोक्ताओं को पर्यावरण के साथ साथ जीवनयापन एवं व्यक्तिगत जैविक उत्पाद भी उपलब्ध होगें।

कृषि प्रसार विशेषज्ञ कैलाश ने बताया कि कृषि-पर्यटन में कृषि आधारित प्रणालियां शामिल होती हैं। इससे आगंतुकों को खेतों एवं कृषि गतिविधियों से जोडने में मदद मिलती है। यहां पर्यटकों को परिवार एवं बच्चों के साथ सीखने का अवसर मिलता है।

यह किसान की ओर से किए जाने वाले खेती के कार्यों को समझने और उनके कार्यों की सराहना करने में भी मदद करता है। प्रशिक्षुकों को जैविक कृषि पर्यटन एवं एकीकृत कृषि प्रणाली की स्थापना के लिए उसकी अवधारणा एवं वर्तमान परिदृश्य, प्रमुख घटक, मूल सिद्धांत, कृषि पर्यटन की स्थापना एवं स्थान चयन में आने वाली चुनौतियां एवं सावधानियां, प्राकृतिक होम स्टे का निर्माण, कृषि पर्यटन के विभिन्न माडल, लेआउट एवं योजना, व्यवसाय प्रबंधन के साथ साथ कृषि पर्यटन के प्रमाणीकरण की विस्तृत जानकारी साझा की। डा. राकेश कुमार, बागवानी विशेषज्ञ ने कृषि पर्यटन एवं एकीकृत कृषि प्रणाली में बाग की स्थापना, लैंडस्कैंपिंग, लान, हेज, टोपयरी, इनडोर एवं आउटडोर पौधों की देखरेख एवं प्रबंधन के साथ ही भृदृश्य से पर्यटन स्थल के सुंदरीकरण की विस्तृत जानकारी दी गई। डा. रितु सिंह, विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) ने कृषि पर्यटन के जैविक उत्पाद की प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन करके सीधे उपभोक्ता को उपलब्ध करवाने के बारे में जानकारी दी।

सस्य विज्ञान विशेषज्ञ डा. समर पाल सिंह ने जैविक रूप से एकीकृत कृषि प्रणाली के प्रमुख घटक एवं बागवानी आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली की स्थापना के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की। पशुपालन विशेषज्ञ डा. जय प्रकाश ने पर्यटन के साथ स्वदेशी डेरी फार्मिंग एवं बैकयार्ड मुर्गी पालन के बारे में बताया। मृदा विज्ञान विशेषज्ञ बृजेश कुमार ने मिट्टी एवं पानी की जांच के साथ साथ वर्मी कंपोस्ट उत्पादन तकनीक पर भी प्रकाश डाला।

कृषि पर्यटन के बारे में प्रशिक्षुओं को जानकारी देते विशेषज्ञ • जागरण

****